ॐ श्री वीतरागायनमः

श्री पद्मनंदि आचार्य विरचित्

अनित्यपंचाशत्.

मुळसंस्कृत अने गुजराती भावार्थ सहित

स्वर्गवासी शा. त्रीकमदास खुशालदास. मालवीना

स्मरणार्थे

श्री दिगम्बर जैन ग्रंथप्रसारक मंडळ तरफथी

संशोधन करी प्रगट करनार

शाह. मोतीलाल त्रीकमदास मालवी.

साकरोल स्टेट–वडोदरा.

आवृत्ति १ ली. प्रत ७५०.

वीरनिर्वाण २४३६ विक्रमार्क १९६६

ई. स. १९१०.

कीमत. रु. ०–४–०.

ॐ श्री वीतरागायनमः

श्री पद्मनंदि आचार्य विरचित

अनित्यपंचाशत्.

मुळसंस्कृत अने गुजराती भावार्थ सहित.

स्वर्गवासी शा, त्रीकमदास खुशालदास. मालवीना
स्मरणार्थे
श्री दिगम्बर जैन ग्रंथप्रसारक मंडळ तरफथी
संशोधन करी प्रगट करनार

शा. मोतीलाल त्रीकमदास मालवी.
बाकरोल स्टेट-वडोदरा.

आवृत्ति १ ली. प्रत ७५०.

वीरनिर्वाण २४३६ विक्रमार्क १९६६
ई. स. १९१०.

कींमत. रु. ०-४-०,

अमदावाद.

रत्नसागर प्रीन्टींग प्रेस.

अर्पण पत्रिका.

श्रीयुत महाशय !

धर्मधुरंधर धर्मस्वरूप परमहितैषी दानवीर

रा. रा. शेठ. माणेकचंद हीराचंद झवेरी. जे. पी.

रत्नाकरपेलेस—मुंबाई.

आप सद्गुण संपन्न तेमज विद्योत्तेजक होई, जैनोमां विद्यानी वृद्धि अने जैनोनो अभ्युदय जोवाने उत्सुक छो, सरस्वतिनो दिव्य सुवास आपना सुहृदयमां सर्वत्र प्रसरी रह्यो छे, तेमज श्रीयुत् आप लक्ष्मीनो सदुपयोग करी विश्व विख्यात छो, स्वधर्मना यथार्थ ज्ञाता होई, स्वजन तेमज परजनने दर्शनीय छो, आप अनेक रिद्धी, सिद्धिओमां अहरनिश रमवा छतां निरहंकार होई, आपनामां गंभीरता, उदारता, नम्रता, दया, निखालसपणुं, वगेरे उत्तम सद्गुणोनो वास होई मननुं सघलुं लक्ष स्वधर्म तेमज जाति कल्याणने माटे-पाठशाळा, बॉर्डींग हाउस, हीराबाग धर्मशाळा, दवाखानां, वगेरे बीजी

उन्नतिनी संस्थाओ जेवां सखावतनां परमार्थ कार्योमां परोवायेलुं छे. छतां आप कुटुंबना श्रेयसाधक पण छो आवां आवां सुखप्रद कीर्तिकिरणोनो प्रकाश मारा हृदयपर पडतां जनसमाजनी उन्नतिना हेतुथी अत्यंत आल्हाद सहित आ "अनित्य पंचाशत्" नामक ग्रंथ आप महानुभावने अविच्छिन्नपणे अर्पण करी कृतार्थ थाउं छुं.

ली.

आपनो कृपाभिलाषी

शाह. मोतीलाल त्रीकमदास. मालवी.

ग्रंथकर्त्तानां ग्राहकोमत्ये आशीर वचन.

वसंततिलकावृत्त.

देवो प्रसन्न सघळा तम उपरे हो,
संतोष शांती सघळा सुख आपजो हो,
कीर्ति अखंड जगमां वळी स्थापजो हो,
संकष्टनी भीति हृदेथकी कापजो हो. १
वृष्टि सुधा अमी तणी वरसावजो हो,
भक्ति अखंड करवा मति आपजो हो;
सारी स्थिति सुभग भाग्य वसावजो हो,
कीर्त्ति तणी विजयमाळ धरावजो हो. २
देवांशी नूतन प्रभा प्रगटावजो हो,
साचो सुमार्ग सुखनो बतलावजो हो;
प्रीतिथी पंथ नीतिनो समजावजो हो,
ने दैवीगुण सघळाय दरशावजो हो. ३
वृत्ति सदाय उमदाज बनावजोहो,
आनंद स्तोत्र सघळांय भणावजो हो;

मीठा मधुर अमीपान पीवाडजो हो,
आयुः शताब्द शुभवर्ष जीवाडजो हो. ४
सद्धर्ममां सतत् फाळ भरावजो हो,
ने ईश धून हृदये उतरावजो हो;
प्राचीनमार्ग सुप्रतिष्ठा बतावजो हो,
सद्धर्म साधनो वळी दरशावजो हो. ५

ली. जाति हितैषी

शाह. मोतीलाल त्रीकमदास मालवी.

प्रस्तावना.

आ विषयपरत्वे केटलीक बीना पद्मनंदी पंचविंशती नामना सर्वमान्य पुस्तकमां जे तेनी संस्कृत टीका सहित छे, तेनुं केटलुंक भाषान्तर सोलापुर निवाशी शेठ. हीराचंद नेमचंद दोशी तरफथी थोडा समयपर थयुं हतुं. तेना लीधे दक्षिण सोलापुर महाराष्ट्र तरफना केटलाक जैन भाईओ दिन प्रतिदिन सुधरवा लाग्या छे अने धीमे धीमे रडवा कूटवाना रीवाजनो साग करता जाय छे. आपणा जैनोमां प्रतिवर्ष निर्णीत·स्थळे कोन्फरन्सो भराय छे तेनी एक बे बेठक गुजरातमां तारंगा, पावागढ वगेरे स्थळे पण थई तेमां पण ते विषय माटे वारंवार दरखास्त मूकाई प्रस्ताव पास थया हता पण तेनो अमल नहीं थतां सघळुं कागळ उपरज रहे छे.

विष्णु लोकमां मृत्यु पछवाडे दश दिवस सुधी गरूडपुराण वांचवामां आवे छे जेना उपदेशथी केटलाक लोको सुधरता जाय छे. तेवीज रीतनुं आपणा जैनभाईओमां पण "अनित्य पंचाशत्" नामनुं पुस्तक छे तेनाथी केटलाक लोक अजाण होवाथी धारमीक बाबतोथी विमुख रहेता जोवामां आवे छे. ते आ "अनित्य पंचाशत्" नो उपदेश दररोज पांच पांच श्लोक वांचता जशे तो लोकोना मननो शोक वि-

सारे पडी धर्मने रस्ते मेराशे एवो आ " अनित्य पंचाशत् " बहार पाडवानो हेतु छे.

आ विषयपर आगळ उपर घणुं कहेवामां आव्युं छे. आ चाल सारो छे, एम कही कोई तेनी हीमायत करतुं नथी, तेम ते फरज पाडी बंध करवाने पण कोई तैयार थतुं नथी. आ विषयपर मारे केटलीक वखते वर्त्तमानपत्र तेमज भाषणोद्वारा चर्चा करवानी जरुर पडी हती, छतां तेमांनी कंईपण असर थई होय तेम जणातुं नथी. रडवुं ए स्वभाविक रीते कोई पण हृदयभेदक बनाव जोई अगर सांभळीने दरेक माणसने आवी जाय छे केमके एतो करुणारसनो एक भाग छे; तोपण अति शोक करवो ए बीलकुल पसंद करवा योग्य नथी. शास्त्रकाराए पण " अति सर्वत्र वर्जयेत " एम जणावेलुं छे.

विष्णुना गरुडपुराणमां पण जणावेलुं छे के मरनारनी पूठे बनी शके तेटलां धार्मीक कृत्यो करवां. एथी मरनारने पूर्वे कंई अनुमोदना थई होय अगर जन्मान्तरमां थाय तो तेथी तेने लाभ थाय छे. आवी रीतनो मळवानो खरो लाभ ते छोडी दई मरनारने दुःख तथा तेनी पछवाडेनां कुटुंबी (सहोदर) माणसोनी तन्दुरस्तीनी पायमाली तेमज अमर्याद वगेरे दोषो दाखल थाय छे. ते तरफ ध्यान आपता जोवामां आवे छे.

वळी केटलाक मूढमति माणसो पोतानुं कोई सगुवहालुं मनुष्य जे स्वकर्मे मृत्यु पामे छे तेनो मोटो शोक आदरीने बेसे छे. ते उपर कह्युं छे के– "मरनारने शामाटे रुओ छो रोनार छे क्यां रहेवाना" एटले पोतेज एक दिवस खेंचाइ जशे तेनो बिचार लेशमात्र पण करता नथी. एकतो प्रियसज्जनना मरणनुं दुःख ने वळी तेना आत्माने रडी रडी नकामो दुर्गतीमां नांखवो आते केवो न्याय ? एक तो "माळापरथी पडवुं ने तेने लाकडीनो मार" ए कहेवतने अनुसरीने वर्त्तन थाय छे. लोको बधी बाबतमां शास्त्रने आडे आवे छे त्यारे आ बाबतमां शास्त्र सामुं पण जोता नथी, हिन्दु, मुसलमान, ख्रिस्ति, पारसी, वगेरे कोईपण शास्त्रमां कोईपण ठेकाणे रडवा कूटवानुं कहेलुं नथीज एम निःसंदेह छे.

भगवद्गीतामां कह्युं छे के—

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय,
नवानि गृह्णाति नरोपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि
संयाति नवानिदेही ॥ १ ॥

भावार्थः—जेम पुरुष जुनां वस्त्रोनो त्याग करी नवीन व-

ओनो पोते विकारने नहीं पामतो छतो स्वीकार करे छे. तेमज देही देहनी जेने उपाधि छे एवो आत्मा स्वयंविकाररहित स्थित् छतो प्रारब्धकर्मानुसार एटले एक मुसाफरनी माफक सारां वा नरसां काम करी, आ जीर्ण शरीरने छोडी बीजा नाम, रुप, जाति, गुण, विषेस वडे पूर्वथी विलक्षण शरीरोने पामे छे.

तेमज वळी कह्युं छे के—

जातस्यहि ध्रुवो मृत्यु ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्माद परिहार्येऽर्थे नत्वं शोचितु महर्षि ॥२॥

भावार्थः—जन्म्या पछी मृत्यु, ने मृत्यु पछी जन्म छे तो शोक करवो मिथ्या छे.

रामायणमां पण एक स्थळे लख्युं छे के—

रामचंद्र एक वखत रात्रिने विशे मनमां एवो विचार करीने निंद्रावश थया हता के प्रातःकाळे हुं चक्रवर्त्ति राजा थईश,; पण पछीथी सहवारमां चौद वरस वनवास जवुं पडयुं ते समये रामचंद्रे पोतानी पत्नि सीताप्रत्ये पोतानुं आश्चर्य प्रगट करतां जणाव्युं के—

प्रातर भवाम्मी वसुधा धिप चक्रवर्त्ति

सोहं व्रजामी विपने जटील तपस्वी ॥ ३ ॥

अर्थात्–हे प्रिये रात्रे हुं एवो विचार करी निंद्रावश थयो हतो के सूर्यनो उदय काळ थतांज हुं चक्रवर्त्ति राजा थईश. परन्तु पछीथी चौद वरस वनवासमां जटा धारण करीने तपस्वी थई रहेवुं पडयुं. माटे काळने रोकवा कोई समर्थ नथी.

तेमज ज्ञानी लोकनुं कहेवुं छे के–मनुष्य जींदगी ए काळना अनंत प्रवाहनुं मोजुं छे, तेनी उत्पत्ति, स्थिती, अने लय ए त्रणे काळमां रहेलां छे. उत्पत्ति अने स्थितीनो काळ पूजाय छे, अने लय काळरूपे वखोडाय छे. वस्तुस्थिती जोतां आ अवस्था प्राणीमात्रने स्वभावतः प्राप्त थाय छे. जन्म्युं ते जवानुं, खील्युं ते करमावानुं, चडयुं ते पडवानुं, प्राणनी माया, ने प्राणनी पूठे झगडो, कोई पांच, पचीस, तो कोई पचास, सो, परन्तु अजरामर (अमर) तो कोई नथी. गई कालनुं वृत्तांत्त ते आजनो ईतिहास, ईतिहास लखनारनो पाछो ईतिहास, कोण कोने रडवुं ? जेम अग्नि सर्वभूकज छे तेम काळ पण सर्वभूकज छे "शीर्यते ईति शरीरं" एतो शरीरनो धर्मज छे के कोई दिवस तेनो नाश थवानोज. पूरण पुरुषोतम नवमा नारायण कृष्ण तेमज चंद्रवंशना युधिष्ठिर तेमज सूर्य-

वंशना मुकुटालंकार राम लक्ष्मण जेवा वीरपुरुषने पण काळने आधीन थवुं पड्युं. तो पछी मनुष्ये मोहमय बनी, मायामग्न बनी, पश्चाताप या विलाप करवो ए केवळ अज्ञान छे. ज्ञानी लोकना आ तत्वज्ञानना अमीझरणाने अमो अभिवंदन आपीए छीए, अने ए वात तो सत्यज छे के नाना, मोटा, गरीब, तवंगर, राय, रंक, ए सघळाने ए ज्ञान उपकारक छे—बादशाह सिकन्दरनी पासे धन्वन्तरी जेवो लुकमान वैद्य (Doctor) अने असंख्य घोडा, हाथी, ऊंट, गाडी, रथ, वगेरे ऐश्वर्य हतुं. छतां मरती वखते तेणे पोताना बे हाथ खुल्ला मूकवा अने सघळी राज्यसमृद्धि तेनी पछवाडे स्वारीमां चढाववाने कह्युं हतुं. ते एवा हेतुथी के आ अप्रतिम समृद्धि छतां ते सघळुं मूकी मारे काळने आधिन थवुं पड्युं छे. पहोळा हाथ मूकवानो सबब ए हतो के आ बधो वैभव छोडी खाली हाथे जाऊं छुं. अर्थात् काळने गरीब किंवा बादशाह समान छे ने सघळाने तेने शरण थवुं पडे छे.

चीना लोकमां कहेवत छे के—आ मनुष्य जींदगी खरेखर कंटाळा भरेली छे, जेना रस्तानी बेउ बाजु लोभ, मोह, मद, मत्सर, आदि शत्रुओ संताई रहेला छे. ते गाफेल मुसाफरने कायर करे छे. परमात्मा तेनी दाद लेई एक भोमियो मोकले

छे जेने आपणे मोत कहीए छीए. माटे मरण थाय छे ते स्वकर्मानुसार दुनियानी मुसाफरी पूरी थवाथीज थाय छे.

एक ग्रीक फीलोसॉफर (विद्वान) नुं कहेवुं छे के—

मरण एटले मात्र लोकान्तरमां जन्म लेवो. खरेखर मरण तो कहेवायज नहीं, केमके आ पापी दुनियामांथी जे खरो भाग्यशाळी होय तेज जलदीथी पोताना अद्रष्टनां फळ आटोपी परलोकने प्राप्त करे छे.

तेमज एक अंग्रेज विद्वाननुं कहेवुं छे के—

The Paths of Glory Lead But To The Grave (Grey.)

एटले मनुष्ये अव्यक्त आदि अने अंतनो विचार मूकी दईने कुदरतना नियमने मान आपी कर्त्तव्य कर्या जवुं, एज राजानुं राजापणुं ने प्रजानुं प्रजापणुं छे. तथास्तु.

नोट—आवा नानकडा पुस्तकने माटे प्रस्तावना के उपोद्घात वधू लखवा बेसीये तो " माथुं नानुं ने पाघडी मोटी थवा जेवुं थाय " आ पुस्तकनुं कदज प्रस्तावना रुपे छे. एम कहीए तो चाली शकशे. तोपण ग्राहकोनी उपरा उपरी मागणीने लीधे आ पुस्तकनुं मुद्रणकार्य घणुं त्वराथी चलाववुं प-

इच्छुं छे. तो हंस प्रकृतिथी वांचकवृंद दोषो प्रति अलक्ष करे, एवी शुभेच्छा छे.

निवृत्तिवास–वाकरोल.
वी. सं. २४३६ विक्रमार्क. १९६६
माघ शुक्लपक्ष पुर्णीमा.

ली. विद्वजननो कृपाभिलाषी.
Motilal Trikamdas Shah. Malvi.

ॐ

श्री शांतीनाथायनमः

अनित्यपंचाशत्.

ॐ नमः श्री महावीर जिनेंद्राय परमात्मने ॥
परं बह्म स्वरुपाय जगदानंद दायिने ॥ १ ॥

भावार्थः—ॐ कारना स्मरण पूर्वक जगतने आनंद आपनार परं बह्म स्वरूप परमात्मा श्री महावीर जिनेंद्रने नमस्कार थाओ.

जयति जिनो धृति धनुषा मिषुमाल भवति योगियोधानां ॥
यद्वा करुणा मय्यपि मोहरिपु प्रहतये तीक्ष्णा ॥ १ ॥

भावार्थः—जिनेश्वर प्रभु जयवंत हज्यो. जेनी वाणी धैर्यरुपी धनुष्यने धारण करनारा योगीरुपी शूरवीर पुरुषने बाणनी पंक्ति रुपी थाय छे. ए वाणी दयामयी छे तोपण मोहरुपी शत्रूने हणवा माटे बहु जोरदार छे.

यद्येकत्र दिनेन भुक्ति रथवा निंद्रा न रात्रौ भवेत्
विद्रात्यं बुज पत्रवदहन तो भ्या शास्थिताद्यध्रुवम्॥
अस्त्र व्याधि जलादितोपि सहसा यच्चक्षयं गच्छति
भ्रातः कात्र शरीरके स्थिति मतिर्नाशोऽस्यको
विस्मयः ॥ २ ॥

भावार्थः—जो एक दहाडो आ शरीरने खावानुं नहीं आप्युं तो रात्रिने विषे ऊंघ आवती नथी. अने जेम अग्निना नजीक कमळपत्र मूकीए तो ते करमाई जाय छे, तेवीज रीते आ शरीरने जो कंई शस्त्रनो महार थयो अथवा तेमां व्याधी उत्पन्न थयो अथवा ते जळादिमां डूबी गयुं तो तरत ते नाश पामे छे. माटे हे भाईयो! एवा नाशवंत शरीरना विषे शाश्वत बुद्धि केम रखाय ? ने एवुं शरीर नाश थाय तेनां आश्चर्य ते शुं? कंइज नहीं.

दुर्गंधा शुचि धातु भित्तिकलितं संछादितं चर्मणा
विण्मूत्रादि भृतं क्षुधादि विलस दुःखाखुभिश्छिद्रितं।
क्लिष्टं काय कुटीरकं स्वयमपि प्राप्तं जरा वन्हिना
चे देत त्तदपि स्थिरं शुचि तरं मूढो जनो मन्यते ॥३॥

भावार्थः—आ कायारुपी झूपडुं केवुं छे के जेनी भींतो जोईए तो दुर्गंध अपवित्र सप्त धातूनी बनेली, अने तेनापर चामडानो गिलावो, ने वळी अंदर मळमूत्र भरेलां, वळी पाछा तेमां क्षुधा विगेरे दुःखरुपो उंदरे छिद्र पाडेलां एटलुंज नहीं पण पोतानी मेळे घडपणरुपी अग्निथी बळी जाय एवुं छतां पण मूर्ख लोको तेने पवित्रने स्थिर (अजरामर) माने छे.

अंभो बुद्बुद सन्निभा तनुरियं श्रीरिंद्रजालोपमा
दुर्वाता हत वारिवाह सदृशा कांतार्थ पुत्रादयः ॥
सौख्यं वैषयिकं सदैवतरलं मत्तांगनापांगवत्
तस्मादेतदुपप्लुवाप्ति विषये शोकेन किंकिंमुदा॥४॥

भावार्थः—आ संसारमां शरीर जे छे ते पाणीना बुड बुडा जेवुं छे. अने लक्ष्मी छे ते इंद्रजाल जेवी छे. अने स्त्री, पुत्र, धन, दोलत तो मोटा पवनथी अथडायला मेघनां वादळां जेवां छे. अने विषयथी नीपजतुं सुख हमेश चंचल एटले उन्मत स्त्रीना नेत्र कटाक्ष जेवुं छे. माटे एवा उपर बतावेला सुखनो नाश थयो तो तेमां शोक ते शुं? अने मळ्युं तो तेथी हर्ष ते पण शुं?

दुःखे वा समुपस्थितेऽथमरणे शोको न कार्योबुधैः
संबंधो यदि विग्रहेण यदयं संभूतिदात्रीतयोः ॥
तस्मात्तत्परि चिंतनीयमनिशं संसार दुःखप्रदो
ये नास्य प्रभवः पुरःपुनरपिप्रायोन संभाव्यते ॥५॥

भावार्थः—जो एवा नाशवंत शरीरनी साथे संबंध छे अने तेमांथी दुःख भोगववुं पडयुं अथवा मृत्यु थयुं, तो ते वखते डाह्या (सुज्ञ) माणसे शोक करवो नहीं. कारण आ काया जे छे ते दुःख अने शोकने उपजावनारी भूमीज छे. माटे निरंतर आत्म स्वरुपनुं चिंतवन करवुं, जे आत्म चिंतवन करवाथी आगळ आ दुःखदाथी संसारमां शरीरनुं उपजवुं तथा मरवुं फरीथी थायज नहीं.

दुर्वारार्जित कर्मकारण वशादिष्टेप्रनष्टेनरे
यच्छोकं कुरुते तदत्र नितरामुन्मत्तलीलायितं ॥
यस्मात्तत्रकृतेन सिद्ध्यति किमप्येतं परंजायते
नश्यंत्येव नरस्य मूढ मनसो धर्मार्थ कामादयः॥६॥

भावार्थः—अनिवार्य उपजावेलां करमने लीधे आपणो

कोई इष्ट पुरुष मरण पामे छे अने तेना माटे आ संसारमां जे अतिशय शोक करवामां आवे छे ते केवल भ्रमिष्ट माणसे चेष्टा करवा जेवुं छे, कारण के तेवो शोक करवाथी कंई पण सिद्ध थतुं नथी, पण उलटुं तेथी–धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, वगेरे ते मूर्ख माणस खोई बेसे छे. एटलुंज थाय छे.

उदेति पाताय रविर्यथा तथा
शरीर मेतन्ननु सर्व देहिनां ॥
स्वकाल मासाद्यनिजेहि संस्थिते
करोतिकः शोकमतः प्रबुद्धधीः ॥७॥

भावार्थः–जेम सूर्य जे छे ते अस्त थवाने माटेज उदय पामे छे, तेमज संपूर्ण प्राणी मात्रनुं शरीर जे छे ते नाश थवाना माटेज उत्पन्न थाय छे माटे पोतानो आयुंदा पूर्ण थवाथी जे कोई माणस तेमज आपणां सगांवहालां भाईबंध मृत्यु पामे छे तेना माटे कोई डाह्यो माणस शोक करशे ! कोईपण नहीं.

भवंति वृक्षेषु पतंति नूनं
पत्राणि पुष्पाणि फलानियद्वत् ॥

कुलेषुतद्वत् पुरुषाः किमत्र
हर्षेण शोकेन च सन्मतीनां ॥८॥

भावार्थः—जेवी रीते वृक्षने पान, फूल, फल, आवे छे अने तेनो खरवानो वखत आव्यो एटले नीचे खरी पडे छे; तेवी रीते एक कुळमां मनुष्य जन्म ले छे अने मरवानो वखत आवे मरी जाय छे, माटे समजु माणसे तेथी हर्ष ते शुं ! ने शोक पण शुं करवो ! कंईज नहीं.

दुर्लंघ्याभ्द वितव्यता व्यतिकरान्नष्टे प्रिये मानुषे
यच्छोकः क्रियते तदत्र तमसि प्रारभ्यते नर्तनं ॥
सर्वं नश्वरमेववस्तु भुवने मत्वामहत्याधिया
निर्धूता खिल दुःख संततिरहो धर्मः सदासेव्यतां।९॥

भावार्थः—आ संसारमां टाळी नहीं शकाय एवा भावि बनाव बनवाथी आपणुं इष्ट (Dear) माणस मरण पामवाथी जे शोक करीये छीये ते अंधारामां नृत्य करवा जेवुं छे. माटे हे बन्धुओ ! आ संसारमां सर्व वस्तुओ नाशवंत (momentary) छे एम समजीने विवेकी माणसे सदा धर्मनुं सेवन करवुं जोईए, कारण धर्मथी संपूर्ण दुःख नष्ट जाय छे.

पूर्वोपार्जितकर्मणा विलिखितंयस्यावसानंयदा
तज्जायेत तदैव तस्य भविनो ज्ञात्वा तदेतद्ध्रुवं ॥
शोकं मुंच मृते प्रियेपि सुखदं धर्मंकुरुष्वादरात्
सर्पे दूरम पागते किमिति भोस्तद्धृष्टिराहन्यते॥१०॥

भावार्थः—जे प्राणीनो पूर्वे उपजावेला कर्म प्रमाणे जे वखते अंत थवानो लखेलो छे ते वखते ते जीवनो अंत थाय छे एवो निश्चय छे, एम समजीने वहालाना मरणनो शोक मूकी द्यो, अने प्रेम भावथी धर्म करो. हे भव्य जीवो, सर्प नीकलीने छेटे गया केडे तेनी नीसानीने लाकडीथी ठोकवी ते मूर्खाई छे.

ये मूर्खा भुवि तेपिदुःखहतये व्यापारमातन्वते
सा माभूदथवा स्वकर्मवशतस्तस्मान्नते तादृशाः ॥
मूर्खान्मूर्ख शिरोमणीन्ननुवयं तानेव मन्यामहे
ये कुर्वंति शुचं मृते सति निजेपापायदुःखायच॥११॥

भावार्थः—आ जगतमां जे मूर्ख लोक, दुःख मटवा माटे रोवा कूटवानो धंधो वधारे छे तेनाथी ते कर्मना लीधे तेमनुं दुःख तो घटतुं नथीज पण ते शोकथी उलटुं पाप अने दुःख

थाय छे. वास्ते जे लोक पोताना सगावहालाना मरणने लीधे शोक करवा बेसे छे तेमने अमे मूर्खना शिरोमणी मानीय छीए.

किं जानासि न किं श्रृणोषि ननु किं प्रत्यक्षमेवेक्षसे
निश्शेषं जगदिंद्र जालसदृशं रंभेव सारोज्झितं ॥
किं शोकं कुरुषेत्र मानुषपशोलोकांतरस्थे निजे
तत्किंचित्कुरुयेन नित्यपरमानंदास्पदंगच्छासि॥१२॥

भावार्थः—हे मनुष्यरूप पशु! तुं आ जगत इंद्रजाळ जेवुं अने केळना गाभानी पेठे असार जाणतो नथी के शुं? अने तेवी रीते सांभळ्युं नथी के शुं? वळी प्रत्यक्ष तारी नजरे जोतो नथी के शुं? अरे आ संसारमां पोतानुं वहालुं कोई परलोक जाय तेना माटे तुं शोक शुं करे छे? एवुं कांई आत्म कल्याणनुं काम कर के जेनाथी तुं सदा काळ परमानंद पदने प्राप्त थईश.

जातो जनो म्रियत एव दिनेच मृत्योः
प्राप्ते पुनस्त्रि भुवनेपि न रक्षकोस्ति ॥

तद्यो मृते सति निजेपि शुचंकरोति
पूत्कृत्य रोदति वने विजने स मूढः ॥ १३ ॥

भावार्थः—जे माणस जन्म पाम्यो छे ते मरणनो वखत आवे मरवानो छेज एमां भूल नथी. तेने रक्षण करवा आ त्रैलोक्यमां कोईपण समर्थ नथी. माटे जे कोई माणस पोतानुं कोई मरी जवाथी शोक करतो बेसे छे तेनो शोक जेम मूर्ख माणसे वगडामां, ज्यां कोईपण सांभळनार नथी त्यां मोटा पोकार करीने रोवा जेवुं छे.

इष्ट क्षयो यदिह ते यदनिष्टयोगः
पापेन तद्भवति जीव पुराकृतेन ॥
शोकं करोषि किमु तस्यकुरु प्रणाशं
पापस्य तौ न भवतः पुरतोपि येन ॥ १४ ॥

भावार्थः—अरे जीव, आ संसारमां जे अणगमतुं आवी मळे छे, अने भावतुं नीकळी जाय छे ते बधुं पूर्वे करेला पापने लीधे थाय छे. माटे तुं शोक शुं करे छे? ते पापनो क्षय करवा मांड! कारण पापनो क्षय थशे एटले पछी अणगमतुं

आवी पडवुं ने भावतुं नीकळी जवुं ए बंने थवानां आगळ मटी जशे.

नष्टे वस्तुनि शोभनोपि हि तदा शोकः समारभ्यते
तल्लाभोथ यशोथ सौख्यमथवाधर्मोथवास्याद्यदि
यद्वे कोपि न जायते कथमपि स्फारैः प्रयत्नैरपि
प्रायस्तत्र सुधीर्मुधा भवतिकः शोकोग्ररक्षोवशः॥१५

भावार्थः—आपणी घणी गमती वस्तु जती रहे त्यारे शोक करीये छीये, पण ते शोक करवाथी ते वस्तु पाछी मळे तेम होय, अथवा ते शोक करवाथी कंई जश मळतो होय अथवा कांई धर्म थतो होय, अथवा कंई सुख थतुं होय, तो ते करवो ठीकज छे. पण आ चारमांथी एक पण शोक करवाथी थतुं नथी तो पछी कोण समजु माणस शोक करतो बेसशे? कोईज नहीं.

एकद्रुमे निशि वसंति यथा शकुंताः
प्रातःप्रयांति सहसा सकलासु दिक्षु ॥
स्थित्वा कुलेबत तथान्यकुलानि मृत्वा
लोकाः श्रयंति विदुषा खलु शोच्यतेकः ॥१६॥

भावार्थः—जेम रात्रिना विषे पंखियो एक झाडपर बेसे छे, अने सवारना सर्व दिशामां ऊडी जाय छे तेम माणस पण एक कुळमां आवे छे अने त्यांथी मरीने बीजा कुळमां जाय छे. माटे विचारवान माणस शामाटे शोक करशे !

दुःखव्याल समाकुलं भववनं जाड्यांधकाराश्रितं
तस्मिन् दुर्गति पल्लिपातिकुपथैः भ्राम्यंतिसर्वेंगिनः।
तन्मध्ये गुरुवाग्प्रदीपममलज्ञानप्रभा भासुरं
प्राप्या लोक्य च सत्पथं सुखपदं याति प्र-
बुद्धो ध्रुवं ॥ १७ ॥

भावार्थः—आ संसाररुपी वन केवुं छे के जेमां दुःखरुपी हाथी भरेला छे, मूर्खाईरुपी अंधकार फेलायेलो छे, वळी ज्यां दुर्गतीरुपी भील लुंटी जाय एवा खराब रस्ता छे. एवा संसाररुपी वनमां संपूर्ण प्राणीमात्र भ्रमण करे छे. त्यां ज्ञानी माणसने गुरुना उपदेशरुपी दीवो जडे तो तेना आधारथी ते पोताना धार्या ठेकाणे एटले मोक्षस्थानमां पहोंची शके छे. कारण गुरु वचन ते ठेकाणे बहु प्रकाश बतावनारुं छे.

यैवस्व कर्मकृत काल कलात्र जंतु

स्तत्रैव याति मरणं न पुरो न पश्चात् ॥
मूढास्तथापि हि मृते स्वजने विधाय
शोकं परं प्रचुर दुःखभुजो भवंति ॥ १८ ॥

भावार्थः—आ संसारमां हरेक प्राणी पोतानां बांधेलां कर्म प्रमाणे जे वखत मरवानो, तेज वखते मरण पामे छे. तेमां घडी आगळ पाछळ थवानी नथी. तेम छतां सगावहालाना मरणथी मूर्ख लोको मोटो शोक आदरीने अतिशय दुःखना भोग थई पडे छे.

वृक्षाद्वृक्षमिवांडजा मधुलिहः पुष्पाचपुष्पं यथा
जीवायांति भवाद्भवांतरमिहाश्रांतं तथा संसृतौ ॥
तज्जातेथ मृतेथ वा नहि मुदं शोकं न कस्मिन्नपि
प्रायः प्रारभतेधिगम्य मति मानस्थैर्य मि-
त्यंगिनां ॥ १९ ॥

भावार्थः—आ संसारमां पंखीओ जेम एक झाड ऊपरथी ऊडीने बीजा झाड ऊपर बेसे छे, भ्रमर एक झाडना फूलप-रथी ऊडीने बीजा फूलपर बेसे छे, तेम प्राणी मात्र पण एक

भव छोडीने बीजो भव हमेश लीधा करे छे. माटे सुज्ञ माणस आ जीवतर बधुं क्षणभंगुर छे एम समजीने कोई वहालुं जन्म पाम्युं तो ते हर्ष करतो नथी तेम कोई वहालुं सगुं मरण पाम्युं तो तेनो शोक पण करतो नथी.

भ्राम्यत् कालमनंत मत्रजनने प्राप्नोति जीवोन वा
मानुष्यं यदि दुष्कुले तदघतः प्राप्तं पुनर्नश्यति ॥
सज्जातावथ तत्र याति विलयं गर्भेपि जन्मन्यपि
द्राग् बाल्येपि ततोपि नो वृषइति प्राप्ते प्र-
यत्नो वरः ॥ २० ॥

भावार्थः—आ संसारमां आ जीवने अनंत काळ सुधी भमता भमता मनुष्य जन्म मळवोज कठण, कदापि ते मळ्यो पण जो नीचा कुळमां जन्म थाय तो ते जन्म त्यां पापकर्मथी नकामो जाय. जो सारा कुळमां कोई वखत थाय तो केटलीवखत गर्भमांज मरी जाय छे अने केटलीक वखत जन्म थया केडे बाळ अवस्थामां मरी जाय छे. वास्ते धर्मसेवन करवानां साधनो मळ्यां होय तो धर्म साधन करवामां बनतो उद्यम शामाटे न करवो जोईए ?

स्थिरं सदपि सर्वदा भृशमुदेत्यवस्थांतरैः
प्रतिक्षण मिदं जगज्जलदकूटवन्नश्यति ॥
तदत्र भवमाश्रिते मृतिमुपागते वा जने
प्रियेपि किमहोमुदा किमुशुचा प्रबुद्धात्मनः॥२१।

भावार्थः—आ जगत सदा सर्व काळ सत्तारुपे शाश्वत छे तो पण मेघना वादळां जेवुं क्षण क्षणमां पर्याय बदलीने हमेश उत्पत्ति अने नाश पाम्यां करे छे. वास्ते करीने आ संसारमां कोई वहालानो जन्म थयो तो तेथी चतुर पुरुषे हर्ष ते शुं करवो? अने कोई वहाला सगानो मृत्यु थाय तेनो शोक पण शुं करवो? कंईज नहीं.

लंघ्यंते जलराशयः शिखरिणो देशास्तटिन्याजनैः
सावेला तु मृतेर्नृपक्ष्म चलनस्तो कापि देवैरपि ॥
तत्कस्मिन्नपि संस्थिते सुखकरं श्रेयो विहाय ध्रुवं
कः सर्वत्र दुरंत दुःखजनकं शोकं विदध्या-
त्सुधीः ॥ २२ ॥

भावार्थः—लोको समुद्र उल्लंघन करी शके छे, मोटा मोटा मोटा ऊंचा पर्वत ओळंमी शके छे, लांबा लांबा देश ओळंगे

छे, मोटी मोटी नदीयो ओळंगी शके छे, पण मरणनी जे वखत ठरेली छे ते आंखना एक पलक मात्र पण मोटा देवताओथी ओळंगी शकाती नथी. माटे आपणुं कोई वहालुं सगुं मरी जाय ते वखत पुन्यना काम करवाना मूकी दईने डाह्यो (सुज्ञ) माणस कोई रोतो बेसशे ? कोईपण नहीं. कारण रोवाथी हमेश दुःखज उपजवानुं छे.

आक्रंदं कुरुते यदत्र जनता नष्टे निजे मानुषे
जाते यच्च मुदं तदुन्नतधियो जल्पंति वातूलतां ॥
यज्जाड्यात्कृत दुष्ट चेष्टित भवत्कर्म प्रबंधो दया
न्मृत्यूत्पत्ति परंपरा मयमिदं सर्वं जगत्सर्वदा ॥२३॥

भावार्थः—आ संसारमां जे लोको पोतानुं ईष्ट माणस मरी जवाथी रुए कूटे छे, अने कोई ईष्ट माणीनो जन्म थवाथी हर्ष माने छे ते बधुं अमिष्ट माणसना बकवा जेवुं छे. कारण के आ आखुं जगत पोतानां कर्यां कर्म उदय आवे ते प्रमाणे सदा सर्व काल जन्म मरणना फेरामां छेज.

गुर्वी भ्रांतिरियं जडत्वमथवा लोकस्य यस्मा द्वसन्
संसारे बहुदुःखजालजटिले शोकी भवत्यापदि ॥

भूतप्रेत पिशाच फेरवचितापूर्णे श्मशाने गृहं
कः कृत्वा भयदाद मंगल कृताद्भावाद्भवेच्छं-
कितः ॥ २४ ॥

भावार्थः—लोकने आ कंई भ्रम छे के लोकनी मूर्खता छे ? कारण अनेक जातना दुःखथी भरेला एवा संसारमां रहे छे, अने दुःख आवे त्यारे पाछो रोतो बेसे छे. जुओ, ज्यां श्मशानमां मडदां बळतां होय, भूत पिशाचना भयंकर शब्द थता होय, ज्यां बधुं अमंगळ देखीतुं होय, त्यां घर बांधीने बेसवुं अने त्यां भूतनी बीक हशे के शुं ? एवी शंका करवी ते केवुं कहेवाय ?

भ्रमति नभसि चंद्रः संसृतौ शश्वदंगी
लभत उदयमस्तं पूर्णतां हीनतां च ॥
कलुषित हृदयः सन्याति राशिंचराशे
स्तुनुमिह तनुतस्तत्कोत्र मुत्कश्च शोकः ॥२५॥

भावार्थः—जेम चंद्रमा आकाशमां सदा काळ भ्रमण करे छे, तेम आ संसारमां प्राणी पण भ्रमण करे छे. जेम चंद्रमानो उदय अस्त थाय छे तेम प्राणी मात्र पण उपजे छे अने

गरे छे. जेम चंद्रमा नानो मोटो थाय छे तेम प्राणीओनी स्थिती पण चढती पडती थयां करे छे. जेम चंद्रमा मेला अंतःकरणनो छतां एक राशीथी बीजी राशीए जाय छे, तेम प्राणी पण एक शरीर मूकीने बीजुं शरीर धारण करे छे. माटे एवा संसारमां हर्ष ते शो ? अने शोक ते शो ? हरखने शोक कंई पण नहीं.

तडिदिव चलमेतत्पुत्र दारादि सर्वं
किमिति तदभिघाते खिद्यते बुद्धिमद्भिः ॥
स्थितिजनन विनाशं नोष्णते वा नलस्य
व्यभिचरति कदाचित् सर्वभावेषु नूनं ॥ २६ ॥

भावार्थः—हे भव्यजीवो, आ स्त्री पुत्रादिक बधां वीजळीना चमत्कार जेवां क्षणभंगुर छे, एम जाणीने तेमनुं मृत्यु थवाथी समजु माणसे खेद शामाटे करवो जोईए ? दुनियामां जेटला पदार्थ छ द्रव्यमां छे ते बधाने उपजवुं, नाश थवुं अने स्थीर रहेवुं साथेज छे. जेम अग्निनी साथे उष्णता होयनेहोय

प्रियजनमृति शोकः सेव्यमानोतिमात्रं
जनयति तदसातं कर्म यच्चाग्रतोपि ॥

प्रसरति शतशाखं देहिनि क्षेत्र उप्तं
वट इव तनुबीजं त्यज्यतां सप्रयत्नात् ॥ २७ ॥

भावार्थः—कोई आपणुं वहालुं सगुं मरण पामवाथी अतिशय शोक करवो तेथी असाता कर्मनो वंध पडे छे, अने ते कर्म आगळ जतां सेंकडो घणुं फेलाय छे. जेम वडनुं बीज झीणुं छे तोपण जमीनमां वावीए तो तेनुं मोटुं वृक्ष थाय छे तेम असाता कर्म बधे छे एम समजीने शोक मटाडवानो प्रयत्न करवो जोईए.

आयुः क्षतिः प्रतिक्षण मेतन्मुखमंतकस्य
तत्रगताः ॥
सर्वे जनाः किमेकः शोचयत्यन्यं मृतं मूढः ॥२८॥

भावार्थः—आयुंदानो क्षय तो समय समय प्रति थयां करे छे. आयुंदानो नाश तो काळनुं मोढुंज छे एम समजवुं, अने ते काळना मोढामां बधायने जवानुं छेज. तेम छतां एक माणस बीजाना मरणने माटे शोक करतो बेसे छे, ते मूर्ख के नहीं.

योनात्र गोचरं मृत्योर्गतो याति नयास्यति ॥

सहि शोकं मृते कुर्वन् शोभते नेतरः पुमान् ॥२९॥

भावार्थः—आ संसारमां जे माणस मरण पाम्यो नथी अथवा मरण पामवानो नथी, तेवो माणस शोक करेतो शोभे, पण जे पुरुष काळने स्वाधीन छे ते शोक करे तो ते शोभतो नथी.

प्रथममुदयमुच्चैर्दूरमारोहलक्ष्मी
मनुभवति च पातं सोपिदेवो दिनेशः ॥
यदि किल दिनमध्ये तत्र तेषां नराणां
वसति त्हृदि बिषादः सत्स्ववस्थांतरेषु ॥ ३० ॥

भावार्थः—आ संसारमां दिनपति जे सूर्य सरखा देव ते पण एक दिवसमां ऊंचा ठेकाणे चढीने पोतानुं पूर्ण तेज प्रकाशे छे, अने पाछो नीचो आवी जाय छे ज्यारे एवा संसारमां केटलीए अवस्थाओ बदलाई जाय छे त्यारे मृत्यु थयुं ए पण एक अवस्था बदलाई केहवाय माटे तेने वास्ते कोण खेद करशे !

आकाश एव शशि सूर्य मरुत्खगाद्याः
भूपृष्ठ एव शकट प्रमुखाश्चरंति ॥

मीनादयश्च जलएव यमस्तु याति
सर्वत्र कुत्र भविनां भवति प्रयत्नः ॥ २१ ॥

भावार्थः—चंद्र, सूर्य, वायु, ग्रह इत्यादि नभ चरजीव आकाशमां विचरे छे. घोडा, गाडीओ, बळद, विगेरे थलचर प्राणी जमीनपर चाले छे. माछलां आदि जलचर जीव पाणीमां रहे छे. पण यमराज एटले काळ जे छे ते बधा ठेकाणे पहोंचे छे. वास्ते प्राणीओने मरणथी बचवानो रस्तो मुक्ति* (मोक्ष) विना बीजो क्यां छे! कोईपण ठेकाणे नथी.

किं देवः किमुदेवता किमगदो विद्यास्ति किं किं मणिः
किं मंत्रः किमुताश्रयः किमुसुहृत्किंवा संगधोस्ति सः

---

* जीव ज्यांसुधी शुभाशुभ कर्म कर्या करे छे त्यांसुधी जन्म मरणनी संतति चाल्या करे छे तेने संसार कहे छे. पण जीव ज्यारे कर्म रहित थाय छे अर्थात शुद्ध अवस्थाने प्राप्त थाय छे त्यारे तेनी मुक्ति केहतां मोक्ष थाय छे.

अन्ये वा किमुभूपतिप्रभृतयः संत्यत्रलोकत्रये
यैः सर्वैरपि देहिनः स्वसमये कर्मोदितं वार्यते॥३२॥

भावार्थः—आ लोकमां जीवने कर्मना उदय प्रमाणे आवेलुं मरण रोकवाने कोई देव अथवा देवता समर्थ छे? कोई वैद्य (Doctor) अथवा औषध, मंत्र, मणी, कंई करी शके छे? कोई मित्र राजा गंध इत्यादिनो कंई ईलाज चाली शके तेम छे? आयुंदा पूर्ण थये कोइनो ईलाज नथी.

गीर्वाणा अणिमादि सुस्थमनसः शक्ताः कि-
मत्रोच्यते
ध्वस्तास्तेपि परंपरेण सपरस्तेभ्यः कियान्राक्षसः॥
रामाख्येन च मानुषेण निहितः प्रोल्लंघ्य सोप्यंबुधिं
रामोप्यंतकगोचरः समभवत्कोऽन्यो बलीयान्
विधेः ॥ ३३॥

भावार्थः—आ लोकमां अणिमादि ऋद्धीना धारक देवता जे छे तेमनुं बळ सहुथी मोटुं कहेवाय छे. तोपण ते देवताओनो एक रावण सरखा राक्षसे नाश कर्यो. देवताओने पीडा करनारो एवो मोटो रावण तेने पण एक रामचंद्र स-

रखा माणसे समुद्र ओळंगीने मारी नांख्यो. अने एवा रामचंद्र सरखा पराक्रमी वीर पुरुष पण काळथी छुट्या नथी तो बीजो कोण एवो बळवान छे जे काळथी बचे ? कोईज नहीं.

सर्वत्रोद्गत शोक दावदहन व्याप्तं जगत्काननं
मुग्धास्तत्र वधूमृगी गतधिय स्तिष्ठंति लोकैणकाः
कालव्याध इमान्निहंति पुरतः प्राप्तान् सदा निर्दय
स्तस्माज्जीवति नो शिशुर्नच युवावृद्धोऽपि
नो कश्चन ॥ ३८ ॥

भावार्थः—आ संसाररुपी वन जे छे ते उपजेला शोकरुपी दावानलथी व्यापी गयेलुं छे एवा संसार वनमां मूर्ख लोकरुपी मृग रहे छे. अने ते स्त्रीरुपी हरिणीना विषयमां लपटाई गयो छे. एवा लोकरुपी मृग काळरुपी पारधीना सामा आवी उभा थयेला छे. तेमने आ निर्दय काळरुपी पारधी मारी नांखे छे. माटे आ काळरुपी पारधीना सपाटामांथी बाळक हो, जुवान हो, अथवा वृद्ध हो तेमांनो कोईपण बची शकतो नथी.

संपच्चारुलतः प्रियापरिलसद्वल्ली भिरा लिंगितः
पुत्रादि प्रियपल्लवो रति सुखप्रायैः फलैराश्रितः ॥
जातः संसृतिकानने जनतरुः कालोग्रदावानल
व्याप्तश्चेन्न भवेत्तदाबत बुधैरन्यत्कि मालोक्यते।३५।

भावार्थः—आ संसाररुपी वनमां लोकरुपी वृक्ष पेदा थयुं छे अने ते संपतिरुपी लता-करी संयुक्त छे. वळी स्त्रीरुपी वेलथी विंटायेलुं छे. तथा पुत्रादिक संततिरुपी जेनां पांदडां छे. अने तेने रतिसुखरुपी घणां फळ आवेलां छे. एवुं वृक्ष छे तेने काळरुपी दावानल अग्नि जो न लागतो होय तो पछी शुं जोइए ! अने ज्ञानीजन बीजुं सुख पण शामाटे खोळे ?

वांछत्येव सुखं तदत्र विधिनादत्तं परं प्राप्यते
नूनं मृत्युमुपाश्रयंति मनुजास्तत्राप्यतो बिभ्यति॥
इत्थं कामभय प्रसक्त हृदया मोहान्मुधैव ध्रुवं
दुःखोर्मिप्रचुरे पतंति कुधियः संसार घोरार्णवे।३६।

भावार्थः—आ संसारमां हरेक माणस सुखनी वांछना करे छे, अने ते सुख जेनां तेनां कर्म प्रमाणे प्राप्त थाय छे. संसारमां मृत्यु तो थवानुं छेज ए वात नक्की छतां लोको ते

मृत्युथी बीहे छे. एवी रीते सुखनी वांच्छनाथी अने मरणना भयथी चित्त आशक्त करीने मूर्ख लोक मोहने वश थई आ दुःखरुपी लहेरो (Waves) थी भरेला संसाररुपी भयंकर समुद्रमां पडे छे.

स्वसुखपयसि दिव्यन्मृत्युकैवर्तहस्त
प्रसृतघन जरोरु प्रोल्लसज्जाल मध्ये ॥
निकट मपि न पश्यत्यापदां चक्रमुग्रं
भवसरसि वराको लोकमीनौघ एषः ॥ ३७ ॥

भावार्थः-आ लोकरुपी माछलानो समुदाय (Multitude) संसाररुपी सरोवरमां मृत्युरुपी धीवरे फेंकेला वृद्धावस्थारुप (Like old age) भयंकर जाळामां इंद्रिय सुखरुपी जलमां क्रीडा करतो छतो पोताना उपर घोर संकट नजीक आव्युं छतां पण जोतो नथी.

श्रृण्वन्नंतकगोचरं गतवतः पश्यन् बहून् गच्छतो
मोहादेव जनस्तथापि मनुते स्थैर्यं परं ह्यात्मनः ॥
संप्राप्तेऽपि च वार्द्धके स्पृहयति प्रायोन धर्माय्य
चद्भ्रात्यधिकाधिकं स्वमसकृत्पुत्रादिभिर्बंधनैः।३८।

भावार्थः—आ माणस घणाएक जीव मृत्यु पाम्या एवुं सांमळे छे तथा पोतानी नजरे जुए छे. तथापी मोहने वश थई पोतानुं जीवतर एवीज रीते कायम (अमर) रहेशे एम माने छे ! वळी वृद्धापकाळ आव्यो तोपण वैराग्यनी ईच्छा करतो नथी, अने पोताना पुत्रादिकना बंधनमां वधारे वधारे बंधाय छे.

दुश्चेष्टा कृतकर्म शिल्पिरचितं दुःसंधिदुर्बंधनं
सापायस्थितिदोषधातुमलवत्सर्वत्र यन्नश्वरं ॥
आधि व्याधि जरा मृतिप्रभृतयो यच्चात्र चित्रं न त-
च्चित्रं स्थिरता बुधैरपि वपुष्यत्रापि यन्मृग्यते।३९

भावार्थः—आ शरीर पापकर्मरुपी—शिल्पिकारे बनावेलुं छे. जुओ, आ शरीरना सांधा अने बांधा केटला नबळा छे? वळी तेने बगडतां पण वार नथी, आखा शरीरमां खराब धातू अने मळमूत्र भरेलां छे. आ शरीर नाशवंत छे. तेना लीधे आ संसारमां जे मानासिक दुःख अने शारीरिक पीडा तथा वृद्धावस्था, मरण अने घणाएक रोग, वगेरे होय तेमां कांई आश्चर्य नथी. पण आश्चर्य तो ए छे जे एवा नाशवंत शरीरना विषे समजु लोको पण स्थिरता धारे छे.

लब्धा श्रीरिह वांछिता वसुमती भुक्ता समुद्रावधिः
प्राप्तास्ते विषया मनोहरतराः स्वर्गेऽपि ये दुर्लभाः ॥
पश्चाच्चेन्मृतिराग मिष्यति ततस्तत्सर्वमेतद्विषा
श्लिष्टं भोज्यमिवातिरम्यमपि धिग्मुक्तिः परं
मृग्यतां ॥ ४० ॥

भावार्थः—आ संसारमां लक्ष्मी प्राप्त थई समुद्र पर्यंत पृथ्वीनुं राज्य भोगव्युं, अने स्वर्गमां पण नहीं भोगववा मळे तेवा विषय भोग मळ्या; पण आखर मृत्यु तो थवानुं छेज, वास्ते आ बधा रळीआमणा सुखने धिक्कार छे. कारण एवुं सुख तो विष मेळवेला भोजन जेवुं कहेवाय माटे मुक्ति जे छे तेज साचुं सुख छे एम समजवुं.

युद्धे तावदलं रथेभतुरगा वीराश्च दप्ता भृशं
मंत्राः शौर्यमसिश्च तावदतुलाः कार्यस्य सं-
साधकाः ॥
राज्ञोऽपि क्षुधितोऽपि निर्दयमनायावज्जिघत्सुर्यमः
क्रुद्धो धावति नैव सन्मुखमितोयत्नो विधेयो
बुधैः ॥ ४१ ॥

भावार्थः—ज्यां सुधी यमराज क्रोधायमान (क्रोधा विष्ट) थईने सामो दोड्यो नथी त्यांसुधीज युद्ध संग्रामने विषे राजाना रथ, हाथी, घोडा, पोतानुं बळ बतावे छे; अने वीर योद्धा पण त्यांसुधीज गर्व राखे छे; अने मंत्र शक्ति पण त्यांसुधीज चाली शके छे; शौर्य अने तरवार पण तेटलीज वखत सुधी काम बजावे छे. कारण आ यमराज एटले काळ जे छे ते महा निर्दय अने भूख्यो छे तेने खाऊं खाऊं करवानीज ईच्छा छे. वास्ते ज्ञानी माणसे काळथी बचवानो यत्न करवो.

राजापि क्षणमात्रतो विधिवशाद्रंकायते निश्चितं
सर्वव्याधि विवर्जितोपि तरुणोप्याशु क्षयं गच्छति॥
अन्यैः किं किल सारता मुपगते श्रीजिवितेद्वतयोः
संसारे स्थितिरीदृशीति विदुषाक्कान्यत्र का-
योमदः ॥ ४२ ॥

भावार्थः—राजा छे तो पण ते कर्मना योगे (संस्कारे) करी क्षणमात्रमां रंक थई जाय छे; खाशो निरोगी तरुण माणस होय छे पण ते कर्मना योगे पलक मात्रमां मरण पामे छे; त्यारे बीजानी तो वातज शी ? जगतमां लक्ष्मी अने जी-

र्वतर ए बेज चीजो सार मात्र छे अने ते बंनेनी एवी क्षण-भंगुर स्थिति जोवामां आवे छे. तो वळी बीजा कया विषय-मां ज्ञानी जने गर्व करवो ? कोईपण बाबतनो गर्व करवो नहीं.

हंति व्योम स मुष्टिनात्रसरितं शुष्कांतरत्याकुल-
स्तृष्णार्तोथ मरीचिकाः पिबति च प्रायः प्रमत्तो-
भवन् ॥
प्रोत्तुंगाचलचूलिकागतमरुत्प्रेंखत्प्रदीपोपमैर्यः
संपत्सुतकामिनी प्रभृतिभिः कुर्यान्मदं मानवः ॥ ४३

भावार्थः—आ संसारमां जे माणस संपदा, स्त्री, पुत्र, ईत्यादिनो गर्व करे छे; ते मूर्ख पोतानी मुष्टीथी आकाशने ताडन करे छे; अथवा सूकायेली नदीमां तरवा जाय छे; किंवा उन्मत थयो थको तृष्णाथी पीडाईने मृग जळ पीवा दोडे छे. कारण संपदा अने स्त्री पुत्रादिक जे छे ते ऊंचा पर्वतना शिखर ऊपर छुटेला पवनमां मूकेला दीवा जेवां छे. तेने नाश थतां कंईवार नथी, एम समजीने कोईपण चीजनो गर्व न करवो.

लक्ष्मीं व्याध मृगीमतीव चपल माश्रित भूपा मृगाः

पुत्रादीनपरान् मृगानातिरुषा निघ्नंति सेर्ष्यीकिलः ॥
सज्जीभूतघना पदुन्नतधनुः संलग्नसंल्हच्छरं
नो पश्यंति समीपमागतमपि क्रुद्धं यमं लुब्धकं॥

भावार्थः—राजाओरुपी मृग छे ते लक्ष्मीरुपी अति चपल एवी पारधीए पकडेली मृगीने भोगववानी लालचथी पुत्र तथा भाई वगेरे रुपी बीजा मृगोने इर्षाथी अतिशय क्रोधायमान थई मारी नांखे छे. ते वखत पोतानी नजीक ऊभा थयेला, अने हाथमां धनुष्य पकडीने तेने बाण चढावीने मारवा माटे सज (तैयार) थयेला, एवा काळरुपी पारधीने पण देखता नथी.

मृत्योर्गोचरमागते निजजने मोहेन यः शोककृत्
नो गंधोपि गुणस्य तस्य बहवो दोषाः पुनर्निश्चितं॥
दुःखं वर्द्धत एव नश्यति चतुर्वर्गो मतेर्विभ्रमः
पापं रुक्‌ मृतिश्च दुर्गतिरथ स्याद्दीर्घसंसारिता ।४५।

भावार्थः—आ लोकमां जे कोई मूर्ख पोतानुं माणस मरवा मांड्युं जाणीने मोहथी शोक करवा मांडे छे तेने फाय-

दो तो लेशमात्र पण थतो नथी, पण उलटुं तेने नुकशान घणुं थाय छे, ते शोक करनारानुं दुःख वधे छे ने तेनां धर्म, अर्थ, काम, अने मोक्ष ए चारे पुरुषार्थ बगडे छे. तेनी बुद्धिमां भ्रम थई जाय छे अने ते रोगथी मरण पामे छे. मूवा केडे तेने दुर्गतीमां जवुं पडे छे. अने ते दुर्गतीना लीधे घोर अंधारमां तेने भमवुं पडे छे.

आपन्यमयसंसारे क्रियते विदुषा किमापदि विषादः
कस्त्रस्यति लंघनतः प्रविधाय चतुःपथे सदनं॥४६॥

भावार्थः—संसारतो दुःखथी भरेलोज छे. एवा दुःखमय संसारमां विपत्ति आवी पडे तो ज्ञानी माणसे खेद शामाटे करवो? नहींज करवो. कारण चारे रस्तानी वचमां घर बांधीने बेशीये अने पछी आपणुं घर कोई ओळंगसे तो तेनो डर शामाटे राखवो जोइए?

वातूल एष किमु किं ग्रह संग्रहीतो
भ्रांतोथवा किमु जनः किमथ प्रमत्तः॥
जानाति पश्यति श्रृणोति च जीवितादि

विद्युच्चलं तदपि नो कुरुते स्वकार्यं ॥ ४७ ॥

भावार्थः—आ माणसने ते कंई वायु थयो छे? के तेने कोई ग्रह वळग्यो छे? अथवा ते कंई भ्रांतिमां आवी गयो छे के तेने थयुं छे शुं? अरे आ जीवतर विगेरे वीजळीना चमकारा जेवुं छे एवुं ते जाणे छे, नजरे देखे छे, अने सांभळे छे तोपण पोतानुं स्वहित करतो नथी.

दत्तं चौषधमस्य नैव कथितः कस्याप्ययं मंत्रिणो
नो कुर्याच्छुचमेवमुन्नतमतिर्लोकांतरस्थे निजे ।
यत्ना यांति यतोऽगिनः शिथिलतां सर्वेमृतेः सन्निधौ
बंधाश्चर्मविनिर्मिता परिलसद्वर्षांबुसिक्ताइव ॥४८॥

भावार्थः—डाह्या माणसे पोतानुं कोई मनुष्य गुजरी जवाथी "अरेरे में तेने दवा आपी नहीं! के कोई मांत्रिकने कह्युं नहीं," एवो शोक करवो नहीं. कारण के आ जीवने काळ आवी पहोंच्यो एटले सघळा प्रयत्न फोकट जाय छे. जेम चामडाना मजबुत बांधेला बंध होय छे तो पण तेना ऊपर पाणी छांटवाथी ते पण ढीला थई जाय छे; तेम—

स्वकर्म व्याघ्रेण स्फुरितनिजकालादि महसा

स्माघ्रातः साक्षाच्छरण रहिते संसृति वने ॥
प्रिया मे पुत्रा मे द्रविणमपि मे मे गृहमिदं
वदन्नेवं मे मे पशुरिव जनो याति मरणं ॥ ४९ ॥

भावार्थः—आ संसाररुपी अरण्यमां आ माणसरुपी एक बकरानुं बच्चुं छे तेने पोतानां कर्मरुपी वाघे त्यां पकडवाथी ते "मे मे" शब्द एटले मारी बैरी (स्त्री) मारां छोकरां, मारा पैसा, मारुं घर, एवा पोकार करतुं मरण पामे छे. तेने आ संसारमां पोताना कर्मरुपी विक्राळ वाघना मोंढामांथी छोडाववा कोई समर्थ नथी.

दिनानि खंडानि गुरुणि मृत्युना
विहन्यमानस्य निजायुषो भृशं ॥
पतंति पश्यन्नपि नित्यमग्रतः
स्थिरत्वमात्मन्यभिमन्यते जडः ॥ ५० ॥

भावार्थः—आपणा आयुंदाना दहाडा बहु होय छे तोपण तेमांथी एक दिवस गयो बे दिवस गया एम थोडे थोडे घटता जाय छे. कारण काळ जे छे ते आयुंदाने घटाडतोज जाय छे. एवुं नजरे देखतो छतो पण पोताने स्थीर माने छे, ते

केवो मूर्ख कहेवाय ?

कालेन प्रलयं व्रजंति नियतं तेषींद्रचंद्रादयः
कावार्तान्य जनस्य कीटसदृशोशक्तेरदीर्घायुषः॥
तस्मान्मृत्यु मुपागते प्रियतमे मोहं मुधा माकृथा
कालः क्रीडति नात्र येन सहसा तत्किंचिद-
न्विष्यतां ॥ ५१ ॥

भावार्थः—हे भव्य प्राणीओ तमे सांभळो. आ काळना लीधे इंद्र, चंद्र ईत्यादिक पण निश्चये करी नाश पामे छे. त्यारे बीजानी तो वातज शी ? कारण बीजा जीव तो पतंग जेवा छे, अशक्त छे, अने थोडां आयुंदावाळा छे. वास्ते कोई ईष्ट (वाह्हालुं) मरी जवाथी विना कारण मोह करीश नहीं. अने एवुं कांई आत्मावलोकन कर के जेनाथी आ शरीर काळना सपाटामां न आवे.

संयोगो यदि विप्रयोगविधिना चेज्जन्मतन्मृत्युना
संपच्चे द्विपदा सुखं यदि तदा दुःखेन भाव्यं ध्रुवं ॥
संसारेत्र मुहुर्मुहुर्बहु विद्यावस्थांतर प्रोल्लस-
द्वेषान्यत्वनटीकृतांगिनि सतः शोकोनहर्षःक्वचित् ५२

भावार्थः–आ संसारमां जो कंईपण सुख हशे तो ते दुःखथी विंटायलुं हशेज. जो संपत्ति हशे तो तेनी साथे विपत्ति पण रहेशेज. आ संसारमां जे जन्म पामे छे तेनी पछवाडे मृत्यु वळगेलुंज छे. ज्यां इष्ट संयोग छे त्यां वियोग पण छेज. आ संसारमां वारंवार नाना प्रकारनी गति, जाति अवस्थारुप वेश लई नाचनारा बहुरुपी जेवी स्थिती छे. वास्ते सुज्ञ माणसे कोई काळे शोक करवो नहीं तेम हर्ष पण करवो नहीं.

लोकाश्चेतसि चिंतयंत्यनुदिनं कल्याणमेवात्मनः
कुर्यात्सा भवितव्यता गतवती तत्तत्रयद्रोच्यते ॥
मोहाल्ला सवशादतिप्रसरतो हित्वा विकल्पा
न बहून्
रागद्वेष विषोज्झितैरिति सदा सद्भिः सुखं
स्थीयतां ॥ ५३ ॥

भावार्थः–माणस पोताना हितने माटे चिंता करे छे पण तेने भवितव्यता प्रमाणे जेटलुं प्राप्त थवानुं तेटलुंज प्राप्त थाय छे. वास्ते मोहना सबबथी वधारे वधेला अनेक विकल्प

मूकी दईने रागद्वेष रहित चतुर पुरुषोए सदाकाळ संतोषमां रहेवुं जोईए.

लोकागृह प्रिय तमा सुत जीवितादि
वाताहतध्व जपटाग्रचलं समस्तं ॥
व्यामोह मत्र परित्हत्य धनादि मित्रे
धर्मे मतिं कुरुत किं बहुभिर्वचोभिः ॥ ५४ ॥

भावार्थः—हे भ्रातृवर्ग, आ घर, स्त्री, पुत्र, जीवतर इत्यादि बधुं पवनथी अथडाती ध्वजाना कपडा जेवुं चंचळ समजजो ? अने धनादि मित्रना विषे मोह मूकी देई धर्म ऊपर चित्त लगाडो एटले बस छे; वधारे शुं कहेवुं जोईए ?

पुत्रादि शोक शिखिशांतिकरी यतींद्र
श्री पद्मनंदि वदनां बुधर प्रसूतिः ॥
सद्बोध सस्य जननी जयतादनित्य
पंचाशदुन्नतधियाममृतैकवृष्टिः ॥ ५५ ॥

भावार्थः—आ अनित्य पंचाशत् जयवंत हज्यो ते केवुं छे के, श्री पद्मनंदि आचार्यना मुखरूपी मेघथी नीकळेलुं छे; तेथी उत्तम बुद्धिवाळा माणसनी उपर अमृतनी वृष्टि करे छे.

अने पुत्रादिकना वियोगथी उपजेला शोकने शांत करनारुं छे बोधरुपी अनाज उपजावनारी जन्मभूमीज छे. ईति श्री अनित्य पंचाशत् संपूर्णां.

विशेषमां कहेवानुं केः—

अनित्यानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वतः ॥
नित्यं सन्निहितो मृत्युः कर्त्तव्यो धर्मसंग्रहः ॥ १ ॥

भावार्थः—आ शरीर अनित्य हमेश नथी (नाशवंत क्षणभंगुर छे.) वैभव पण सदा रहेतो नथी, अने मृत्यु सदा समीपज ऊभुं छे. एम जाणी धर्मनो संग्रह करवो जोइए.

ॐ श्री शांन्ति शांन्ति शांन्ति ॥

अगाउथी ग्राहक थई आश्रय आपनारना मुबारक नाम.

मुंबाई.

१० रा. रा. झवेरी माणेकचंद हीराचंद जे. पी.
५ ,, ,, शेठ. नाथा रंगजी गांधी. आकलुजवाळा
२ ,, ,, परी. लल्लुभाई प्रेमानंददास एल सी. ई.
५ ,, ,, चोकसी. माणेकचंद लाभचंद
१ ,, ,, चोकसी. लल्लुभाई लक्ष्मीचंद
१ ,, ,, शा. केशवलाल प्रेमानंददास
१ ,, ,, शा. जीवणलाल हलोचंद बोचासणवाळा
१ ,, ,, शा. हाथीभाई माणेकचंद सोनासणवाळा
२ ,, ,, परी. जेठालाल प्रेमानंददास
१ ,, ,, एन. सी. पटेल. मील्क सप्लाई डेरी कुं.
१ ,, ,, जेठाभाई छगनभाइ पटेल.

सुरत.

२ ,, ,, दिगम्बर जैन पत्रना एडीटर शा. मुलचंद
कसनदास कापडीआ.

१ ,, ,, शा. छगनलाल घेलाभाई तासवाळा

आमोद.

१ ,, ,, शा. संकरलाल तापीदास गांधी

१ ,, ,, शा. हरजीवनदास रायचंद

१ ,, ,, शा. कालीदास हरगोवन

१ ,, ,, शेठ. माणेकचंद दीपचंद

१ ,, ,, शेठ. जोईतादास केवळदास

पुरसा—आमोद.

१ ,, ,, शेठ. छगनलाल देवचंद

बाकरोल.

१ ,, ,, शा. बालगोविंद बापुजी

१ ,, ,, शा. हरीलाल छोटालाल

१ ,, ,, शा. छोटालाल कीसोरदास

अंकलेश्वर.

२ ,, ,, शा. छोटालाल घेलाभाई गांधी

१ ,, ,, शा. नाथुभाई प्राणजीवनदास

१ ,, ,, शा. खुपचंद धरमचंद

४ ,, ,, शा. कल्याणचंद लालचंद

१ ,, ,, शा. मोतीचंद झवेरचंद

बोरसद.

२ ,, ,, शा. मोतीलाल भाईजी

१ ,, ,, शा. भाईलाल कपुरचंद डॉक्टर हाल करमसद.

१ ,, ,, शा. सीवलाल सांमळदास

१ ,, ,, शा. परसोतम वरजलाल

१ ,, ,, शा. बेचरदास भवानीदास

१ ,, ,, शा. साकरलाल देवचंद

छाणी.

२ ,, ,, शा. सुरचंद मनोरदास

१ ,, ,, शा. मगनलाल गरबडदास

१ ,, ,, शा. मोतीलाल दुलबदास

पादरा.

५ ,, ,, शा. डाह्याभाई माणेकचंद गांधी.

१ ,, ,, शा. जेठाभाई शीवलाल

१ ,, ,, शा. तलसीदास रणछोडदास

१ ,, ,, शा. नाथाभाई ईश्वरदास

१ ,, ,, शा. जमनादास ईश्वरदास

१ ,, ,, शा. कल्याणदास नरसीदास

१ ,, ,, शा. जेचंद शीवलाल

१ ,, ,, शा. फुलचंद गुलाबचंद

१ ,, ,, शा. सोमचंद नरोतमदास

१ ,, ,, शा. बेचरदास वीरचंद

१ ,, ,, शा. अमृतलाल दामोदर

१ ,, ,, शा. जेचंद मरबडदास.

१ ,, ,, शा. जेठाभाई फुलचंद.

१ ,, ,, शा. कालीदास ललुभाई.

१ ,, ,, शा. गीरधरलाल काशीदासदलाल

१ ,, ,, ठकर. आशाराम अवीचलदास.

१ ,, ,, शा. रायचंद कीलाभाई.

कीमबरली (साऊथ) आफ्रिका.

२ K. K. Patel.

खेरालु.

१ ,, ,, शा. चुनीलाल हाथीभाई

१ ,, ,, शा. बादरभाई हाथीभाई

केरवाडा.

१ ,, ,, शा. नरोतमदास हरजीवनदास

ईसणाव.

२ ,, ,, शा. नरशीदास गंगादास

पीपळाव.

१ ,, ,, शा. देवचंद बाबरदास

वडोदरा.

१ ,, ,, शा. परभुदास ईश्वरदास
१ ,, ,, शा. केशवलाल त्रीभोवन
१ ,, ,, शा. हरजीवन लालचंद
१ ,, ,, शा. भोगीलाल नाथाभाई
१ ,, ,, शा. वीरचंद त्रीकमदास
१ ,, ,, शा. नाथाभाई रणछोडदास
१ रा. रा. शा. लालचंद कहानदास.

वेडच.

१ ,, ,, शा. पानाचंद मनोरदास
१ ,, ,, शा. मंगळदास नाथाभाई
१ ,, ,, शा. मोतीलाल तलसीदास
१ ,, ,, शां. भाईजीभाई नाथाभाई
१ ,, ,, शा. वेचरलाल परसोतमदास

वलासण.

१ ,, ,, शा. वलवदास ईश्वरदास
१ ,, ,, शा. मुलचंद ईश्वरदास
१ ,, ,, शा. कासीदास बापुजी
१ ,, ,, शा. नारणदास भाईजी

जोळ.

२ ,, ,, शा. छगनलाल गंगादास
१ ,, ,, शा. लालदास बापुजी
१ ,, ,, शा. त्रीभोवनदास भीखाभाई करमसदवाळा

मोगरी.

१ ,, ,, शा. जगजीवनदास रुगनाथदास
१ ,, ,, शा. रणछोड शीवलाल

ताणजा.

१ ,, ,, शा. जेठाभाई लखमीदास

मखीआव.

१ ,, ,, शा. छगनलाल कुबेरदास
१ ,, ,,श्री दिगम्बर जैन पुस्तकालय
१ ,, ,, शा. नेमचंद उजमसी

१ ,, ,, शा. केवळदास वरधमान
१ ,, ,, शा. ईश्वरदास वर्धमान
१ रा. रा. शा. दलसुख रायचंद
१ ,, ,, शा. जेठाभाई लक्ष्मीचंद
१ ,, ,, शा. कमळशी रतनचंद
१ ,, ,, शा. वाडीलाल आशाराम हीरापुरवाळा

फलटण-जी-सातरा

१ ,, ,, शा. वीरचंद कोदरजी गांधी

वडु.

१ ,, ,, शा. हरीभाई मंगळदास
१ ,, ,, शा. देवचंद लालचंद
१ ,, ,, शा. भीखाभाई घेलाभाई
१ ,, ,, शा. मंगळदास रामदास
१ ,, ,, शा. तलकचंद नंदलाल
१ ,, ,, शा. माणेकलाल प्रेमचंद
१ ,, ,, शा. सेवकलाल दलपत
१ ,, ,, शा. रायचंद मोतीलाल
१ ,, ,, शा. ईश्वरदास बेचरदास

दावोल.

१ ,, ,, शा. पीताम्बरदास झबेरदास

१ ,, ,, शा. हरकीसनदास माणेकचंद

१ ,, ,, शा. वनमालीदास नानचंद

१ ,, ,, शा. दामोदरदास ईश्वरदास

१ ,, ,, शा. तलसीदास ताराचंद

१ ,, ,, शा. नरशीदास ताराचंद

१ ,, ,, शा. परभुदास शीवलाल

१ ,, ,, शा. केशवलाल नारणदास

१ ,, ,, शा. मगनलाल अंबईदास

१ ,, ,, शा. जीवाभाई हरीभाई

१ ,, ,, शा. पानाचंद जमनादास

सोजीत्रा.

१ ,, ,, शा. ललुभाई हरीदास

१ ,, ,, शा. सामलदास परभुदास

१ ,, ,, शा. दलपतभाई केवळदास एल.सी.इ

१ ,, ,, शा. कल्याणदास कहानदास

१ ,, ,, शा. देवचंद कल्याणदास लींबासीवाळा

१ „ „ शा. मगनलाल जमनादास
१ „ „ शा. भगवानदास झवेरदास
१ „ „ शा. चतुरभाइ बेचरदास
१ „ „ शा. चुनीलाल फुलचंद करमसदवाळा
१ „ „ शा. भाईलाल पीतांबरदास

सादरा

१ „ „ शा. नारणदास तलसीदास
१ „ „ शा. मलुकचंद तलसीदास

जलालपुरा.

१ „ „ शा. कसनदास ईश्वरदास

भाईली.

१ „ „ शा. रणछोडदास कल्याणदास

डुंडाकुवा.

१ „ „ शा. गुलाबचंद मुळजी बाकरोळवाळा

मालावाडा.

१ „ „ शा. पुंजाभाई दुलवदास
१ „ „ शा. छगनलाल बेचरदास

देथली.

१ „ „ शा. चतुरभाई मथुरदास

१ ,, ,, शा. छोटालाल बोघाभाई
१ ,, ,, शा. शीवलाल हरीभाई

करोल.

१ ,, ,, शा. वेणीचंद दलुचंद

सदानुंमुवाडु.

१ ,, ,, शा. मीयाचंद गंगुचंद

वदराड.

१ ,, ,, शा. ताराचंद छगनलाल

लींबासी.

१ ,, ,, शा. बापुलाल प्रेमचंद

बाघरा.

१ ,, ,, शा. जेसींगभाई गुलाबचंद थर्डकलास माजिस्ट्रेट

काणीसा.

१ ,, ,, शा. वस्ताभाई ईश्वरदास
१ ,, ,, शा. नाथाभाई नंदलाल
१ ,, ,, शा. कालीदास नंदलाल

मगरोल.

१ ,, ,, शा. जेसींगभाई मथुरदास हाल सोजीत्रा

सांयमा.

१ ,, ,, शा. हरीलाल नानाभाई

१ ,, ,, शा. ललुभाई तलसीदास

१ ,, ,, शा. चुनीलाल जमनादास

अलाडा.

१ ,, ,, शा. देवचंद जेठाभाई

मोरड.

१ ,, ,, शा. शीवलाल तलसीदास करमसदवाळा

तारापुर.

१ ,, ,, शा. प्रेमचंद दीपचंद

भोज.

१ ,, ,, शा. मुलजीदास जोईताभाई

१ ,, ,, शा. मोतीलाल जोईताभाई

वसो.

१ ,, ,, शा. डाह्याभाई दामोदरदास

१ ,, ,, शा. मंगळदास देवचंद

१ ,, ,, शा. नारणदास हरगोविंददास गांधी

सोखडा.

१ ,, ,, शा. कीलाभाई गुलाबचंद

घायज.

१ ,, ,, शा. प्रेमचंद देवचंद

नार.

१ ,, ,, शा. कल्याणदास भाईजी

भीलोडा.

१० ,, ,, शा. ललुभाई गुलाबचंद
१ ,, ,, शा. तलकचंद कुबेरदास
१ ,, ,, शा. माणेकलाल तलकचंद

सोनासण.

१ ,, ,, शा. नाहालचंद सांकलचंद
१ ,, ,, शा. जीवराज उगरचंद
१ ,, ,, शा. नेमचंद मगनलाल
१ ,, ,, शा. गुलाबचंद नानचंद

मांजलपुर.

१ ,, ,, शा. फुलचंद मोतीलाल

बांच.

१ ,, ,, शा. भीखाभाई बहेचरदास
१ ,, ,, शा. फुलचंद मगनलाल
१ ,, ,, शा. अमथाभाई [illegible]

१ ,, ,, शा. मुलचंद ईश्वरदास

असलाली.

१ ,, ,, शा. मंगळदास माणेकचंद

१ ,, ,, शा. शा. फुलचंद्र मोतीचंद

तलोद.

१ ,, ,, शा. जीवराज सुरचंद

करमसद.

१ ,, ,, शा. केवळदास रणछोडदास

१ ,, ,, शा. चीमनलाल जीवाभाई

१ ,, ,, शा. रणछोडभाई जगजीवनदास

१ ,, ,, शा. झवेरदास रणछोडदास

१ ,, ,, शा. जेसींगभाई मथुरदास

१ ,, ,, शा. परभुदास जेसींगभाई

१ ,, ,, शा. मुलजीसा दामोदरदास

१ ,, ,, शा. कीलाभाई पुंजाभाई

१ ,, ,, शा. भाईलाल रणछोडदास

१ ,, ,, शा. खेमचंद कीलाभाई

१ ,, ,, शा. वस्ताभाई फूलचंद

१ ,, ,, शा. छोटालाल शीवलाल

पेटलाद.

१ ,, ,, शा. छगनलाल हरीभाई
१ ,, ,, शा. मगनलाल कीसोरदास
१ ,, ,, शा. मुलजीशा हरीभाई
१ ,, ,, शा. फुलचंद रुगनाथदास

दाहोद.

४ ,, ,, शा. कपुरचंद पुनमचंद बोबडा
२ ,, ,, शेठ. जेचंद नाथजी
१ ,, ,, शेठ. मुलचंद मोतीचंद
१ ,, ,, शेठ. पनालाल उदेचंद
१ ,, ,, शेठ. पनालाल खेमचंद
१ ,, ,, शेठ. नगीनलाल शोभागचंद

रखीआल.

१ ,, ,, शा. देवचंद वहालचंद

आकलाव.

१ ,, ,, शा. फूलचंद शीवलाल

डबका.

२ ,, ,, शा. त्रीभोवन अमथाभाई
१ ,, ,, शा. कालीदास अमथाभाई

१ रा. रा. शा. विठलदास हीराचंद

नरोडा.

१ ,, ,, शा. चुनीलाल अंबाराम संघवी

ओरण.

१ ,, ,, शा. मंगलदास वीरचंद
१ ,, ,, शा. छगनलाल मलुकचंद
१ ,, ,, शा. हाथीभाई नथुभाई

कलोल.

१ ,, ,, शा. जीवणलाल गोपालदास
१ ,, ,, शा. कस्तुरचंद दीपचंद वहवारीया

व्यारा.

१ ,, ,, शा. शीवलाल झवेरचंद
१ ,, ,, शा. बेचरभाई खुशालदास

हाथीजन.

१ बाई रामबाई रा. शा. जेठाभाई गोपाळदासना विधवा
१ बाई. मणीबाई रा. शा. नागरदास गोपाळदासनी विधवा

महूवा.

१ ,, ,, शा. अमृतलाल जगजीवनदास

अहेर.

१ ,, ,, शा. गीरधरलाल शंभुलाल

प्रांतीज.

१ ,, ,, शा. भाईचंद गुलाबचंद

१ ,, ,, शा. नेमचंद उगरचंद

१ ,, ,, शेठ. भोगीलाल मगनलाल

जांबुवा स्टेट.

१ ,, ,, शेठ. गोबीलाल कस्तुरचंद

बोचासण.

१ ,, ,, शा. वनमाळी हरखचंद

पेथापुर.

१ ,, ,, शा. नानचंद नागरदास

१ ,, ,, शा. मानचंद पानाचंद

१ ,, ,, शा. सांकलचंद अनोपचंद

महेलाव.

१ ,, ,, शा. बाबरदास राईजी

१ ,, ,, शा. मथुरदास राईजी

१ ,, ,, शा. भाईलाल मकनदास

छुदेक.

१ ,, ,, शा. हरकसनदास बापुजी
१ ,, ,, शा. तापीदास जादवजी
१ ,, ,, शा. मगनलाल गुलाबचंद

फतेपुर.

१ ,, ,, शा. चुनीलाल रामचंद
१ ,, ,, शा. माणेकलाल छगनलाल

बोडेली.

१ ,, ,, शा. मोतीलाल पानाचंद

खटलाल (खंभात)

१ ,, ,, शा. जमनादास परसोतमदास

शुद्धिपत्र.

पृष्ट.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
३	११	रिद्धी	रिद्धि
,,	१२	अहरनिश	अहर्निश
,,	१३	नमृता	नम्रता
६	५	सुप्रतिष्ठा	सुप्रतिष्ठ
८	८	स्वभाविक	स्वाभाविक
,,	१२	वर्जयेत	वर्जयेत्
,,	१४	धार्मींक	धार्मिक
९	६	दुर्गती	दुर्गति
,,	१२	एम	ए
१०	१	स्वीकार	स्विकार
,,	१३	विशे	विषे
,,	१४	निंद्रावश	निद्रावश
,,	१८	भवामी	भवामि
११	१	व्रजामी	व्रजामि
,,	२	निंद्रावश	निद्रावश

,,	७	स्थिती	स्थिति
,,	८	स्थितीनो	स्थितिनो
,,	९	वस्तुस्थिती	वस्तुस्थिति
,,	१७	पुरुषोतम	पुरुषोत्तम
१२	२	आधीन	आधिन
,,	३	मश्चाताप	पश्चात्ताप
१३	२	कर्मानुंसार	कर्मानुसार
१३	१४	वधू	वधु
१५	७	थाओ	हो
१५	११	हज्यो	हो
१६	१	निंद्रा	निद्रा
,,	२	वदहन	वदहन
,,	१२	तेनां	तेमां
,,	१४	च र्मणा	चर्मणा
१७	४	दुःस्वरुपो	दुःस्वरुपी
१८	१०	दुःखदाथी	दुःखदायी
,,	१६	अनिर्वार्य	अनिवार्य
२०	१७	मटजाय छे	मटी जाय छे

२१	४	भोस्तद्धष्टि	भोस्तद्धृष्टि
,,	८	ताद्दशा	ताद्दशा
२२	३	मानीय	मानीये
,,	४	शृगोषि	शृणोषि
२५	१२	दुर्गतीरूपी	दुर्गतिरुपी
२७	१	बीजा	बीजो
२७	३	सगुं	सगु
२८	१६	ओळंमी	ओळंगी
२९	४	सगुं	सगु
,,	१६	यस्मा,द्वसन्	यस्माद्वसन्
३०	१३	त्हदयः	त्हदयः
३१	२	स्थिती	स्थिति
३२	३	सगुं	सगु
३२	७	बधे छे	बधे छे
३४	३	नभ चरजीव	नभचरजीव
३७	१५	वाच्छना	वांच्छना
४२	१७	चपल माश्रित	चपला मा श्रिस
४४	१५	भ्राती थवा	भ्रांतो थवा

४५	३	अथबा	अथवा
४७	३	तस्मान्मृत्यु मुपागते	तस्मानमृत्युमुपागते
४७	१६	विद्यावस्थांत्तर	विधावस्थांतर
४८	६	स्थिती	स्थिति
४९	३	सभस्तं	समस्तं
५०	१५	हृज्यो	हो
५०	१०	ॐ ॐ शांन्ति शांन्ति शांन्वि	ॐ शान्ति शान्ति शान्ति

भेट तरीके अपातां पुस्तको.

पाठशाळाने भेट.

१	श्री दिगम्बर जैनधर्म हितेच्छु मंडळ पाठशाळा	करमसद.
१	श्री दिगम्बर जैनधर्म प्रसारक पाठशाळा	पादरा.
१	श्री दिगम्बर ज्ञानप्रसारक पाठशाळा	वडु.
१	श्री दिगम्बर जैनधर्म पाठशाळा	सोजीत्रा.
१	श्री दिगम्बर जैन पाठशाळा	अंकलेश्वर.
१	श्री दिगम्बर जैन पाठशाळा	वसो.
१	श्री दिगम्बर जैन पाठशाळा	राणपुर.
१	श्री दिगम्बर जैन पाठशाळा	दाहोद.

बोर्डींग हाउसने भेट.

१	मरहुम शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगम्बर जैन बॉर्डींगहाउस	अमदावाद.

श्राविकाश्रमने भेट.

१	श्री दिगम्बर जैन श्राविकाश्रम	अमदावाद.
१	श्री दिगम्बर जैन श्राविकाश्रम	प्रांतीज.

जाहेर खबर.

नीचे लखेला पुस्तको रोकडी कींमते लखेला ठेकाणे मलशे.

जैन स्तवनावळी—एमां त्रण चोविसी, णमोकारमंत्र, ॐकार मंत्र, वर्त्तमान तीर्थंकरनां स्तवन, पंच आरति, सरस्वति स्तुती, देवदर्शन भावार्थ सहित, तीर्थवंदना स्तुती, महावीरस्तोत्र, निर्वाणकांडभाषा, वि. धार्मिक विषयो छे. कीं. रु. ०–२–६

मिथ्यात्वनिषेध ने सुतकनिर्णय—एमां मिथ्यात्व बाबतोथी आपणे केवी अधोगतिमां आवी गया छीये तेमज सुतक विषे केटलीक बीना आपेली छे. (छपायछे). कीं. रु. ०–३–०

विद्यालक्ष्मीसंवाद—एमां विद्याथी शा फायदा छे ते विषे हकीकत छे.

रवीव्रतकथा—एमां रवीव्रतकथा तथा पार्श्वनाथ स्त्रोत्र छे. कीं. रु. ०–१–०

धर्मप्रबोधनी—एमां अन्यमतना जैनमत विषे सिद्धांत छे. कीं. रु. ०–३–०

आलोचना पाठ—एमां करेला पापोनी माफी मागेली छे. आवृत्ति बीजी छपाय छे. कीं. रु. ०–१–६

अकलंक स्तोत्र—एमां जैनधर्मना सिद्धांत आपेला छे. तेमज तेना मुळ रचनार भट्टाकलंकदेवनुं जीवन चरित्र पेलुं छे. कीं. रु. ०–३–०

मलवानां ठेकाणां.

शाह. मोतीलाल त्रीकमदास मालवी. भाषांत्तर कर्त्ता. बाकरोल–आनंद–केरा.

शा. छोटालाल घेलाभाई गांधी. अंकलेश्वर–भरुच.

दिगम्बर जैनपत्रना एडीटर शा. मुलचंद कसनदास कापडीआ. चंदावाडी–सुरत.

शा. भाईलाल कपुरचंद डॉक्टर. करमसद–केरा.

सहस्त्रपुटी अभ्रकभस्म.

ज्ञानतंतुनी नबळाई, स्मरणशक्तिनो नाश, नामर्दाई, तेमज धातूपातथी अशक्त बनेला पुरुषोने खरुं पुरुषत्व आपी तन्दुरस्त बनावे छे. बीजा वैद्यो जे तोला एकना रु. ४०–०–० मां वेचे छे ते तेनी खरी व्याजबी कींमत तोला एकना रु. १०–०–० मां मलशे. एकवार वापरेथी खात्री थशे.

वैद्यशास्त्री. हरजीवन जयशंकर भट्ट.
बाकरोल—आनंद–केरा.

भाषान्तर कर्त्ता पासेथी पण मळशे.

कामशास्त्र.

सघळी जातना नैतिक अने शारीरिक भयमांथी
मुक्त रहेवा माटे
महेरबानी करी अमारुं उपर लखेलुं पुस्तक वांचो.
ते आरोग्य दोलत ने आबादीनो उत्तम मार्ग देखाडनार छे.
दरेक भाषामां आज सुधीमां तेनी ४२ आवृत्तिमां
छ लाख प्रतो मफत वहेंचाई चुकी छे.
विना मुल्ये टपाल खर्च लीधा सिवाय मोकलवामां आवे छे.

वैद्यशास्त्री. मणीशंकर गोविंदजी.

आतंकनिग्रह औषधालय.
जामनगर (काठीआवाड).

ब्रांच ओफीसो.

मुंबाई–कालकादेवीरोड.
कलकत्ता–नं. २१४ बाउबजार स्ट्रीट.
पुनासीटी–बुधवार पेठ.
करांची–बंदर रोड.
अल्हाबाद–जोहन्स्टगंज.
मद्रास–एस्प्लेनेड रोड.

आंखनी अपूर्व औषधी.

☞ आ दवा आंखना तमाम दरदो जेवा के—आंखनुं दुखवुं, झामर, गरमीने लीधे आंखमां थती बळतरा तथा पाणीनुं गळवुं, झांख पडवी, छारी तथा फुलनुं पडवुं, वगेरे तमाम विकारने नाबुद करी तेजस्वी बनावे छे.

कीं. रु. ०—४—० पोष्टेज जुदुं.

एकवार वापरेथी खात्री थशे.

मळवानुं ठेकाणुं.

पुरुषोत्तम ईश्वरभाई जोशी,

वाकरोल—आनंद—केरा.

सुचना.

आ पुस्तकनो सघळो नफो अमदावाद श्राविकाश्रमने मदद तरीके आपवामां आवनार छे, तो सर्वे जैनभाइओ योग्य मदद आपी आ पुस्तकना ग्राहक थई आभारी करशे.

ली. परमार्थीनो सेवक.

M. T. Shah. Malvi.